PEN2PRINT®
Edupedia Publications Pvt Ltd

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

हिंदी नवजागरण की रूपरेखा

नीरजा सिंह

19वीं शताब्दी में सम्पूर्ण भारत में जिस नवीन चेतना का प्रचार–प्रसार हुआ, उसे कई नामों से पुकारा गया। रेनसा, पुनर्जागरण, पुनरुत्थान, प्रबोधन, नवोत्थान, नवजागरण तथा समाजसुधार इत्यादि। कई नामों से अभिहित किए जाने वाले इस दौर का क्या नाम दिया जाय, यह विद्वानों के बीच विवाद का विषय रहा है। सबसे पहले 'रेनेसाँ' के स्थानापन्न के रुप में हिन्दी पुनर्जागरण शब्द का प्रयोग होने लगा। डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेव ने इस युग को 'नवोत्थान' का नाम दिया।[1] जबकि रामधारी सिंह दिनकर ने इसके लिए 'पुनरुत्थान' शब्द का प्रयोग उचित समझा।[2] लेकिन हिन्दी में अब इस युग के लिए 'नवजागरण' शब्द का प्रयोग अधिक से अधिक किया जाने लगा है। इस शब्द का प्रयोग पहली बार डॉ. रामविलास शर्मा ने किया। उन्होंने 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' (1977) नामक पुस्तक के द्वारा न केवल नवजागरण बल्कि हिन्दी नवजागरण की भी संकल्पना प्रस्तुत की।[3] इसके पूर्व बंगला के पुनर्जागरण या नवजागरण की ही चर्चा होती थी। हिन्दी साहित्य कोश में 'नवजागरण' को व्याख्या करते हुए यह टिप्पणी दी गयी है कि "नवजागरण काल में आधुनिक राष्ट्रीय राज्य परम्परा का उदय, सामंतशाही का ह्रास, पूंजीवाद का आगमन तथा उसके परिणामस्वरुप एक नये वर्ग का उदय एवं भाषाओं का विकास देखने को मिलता है। मनुष्य की दृष्टि जो सदा परलोक पर टिकी रहती थी, अब इस लोक में संचरण करने लगी। धर्म का स्थान दर्शन ने ले लिया। सन्यासियों के स्थान पर ऐसे बुद्धिजीवियों का पदार्पण हुआ, जो मन या स्वभाव को वश करने के बदले, उसके विकास एवं सार्थक परिणति में आस्था रखते हों।"[4]

अतः हम यह कह सकते हैं कि नवजागरण जिसका जन्म मुख्यतरू बुद्धिवाद, समाजसुधार, वैज्ञानिक खोज, सामूहिक उत्पादन प्रणाली के विकास के साथ हुआ वह एक नयी संस्कृति एवं नयी दुनिया को रचने का प्रयास था।

जिस नवजागरण की बात यहाँ कही जा रही है उसका स्वरुप सम्पूर्ण भारत में एक सा नहीं था। बंगाल में जहाँ अंग्रेजी शिक्षा का जोर था वहीं महाराष्ट्र में दलित आंदोलन ही नवजागरण का मुख्य आधार था। नवजागरण की यह चेतना भारत के

कुछ क्षेत्रों में समूची ऊर्जा के साथ प्रस्फुटित हुई तो कहीं कुछ क्षेत्र इस चेतना से वंचित रहे।

हिन्दी क्षेत्र के जीवन में पिछड़ेपन, सामंती अत्याचारों, स्त्रियों एवं दलितों की स्थिति जैसी समस्याएँ प्रमुखता लिए बनी रही। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में जहाँ नवजागरण के मुख्य सुत्रधार के रुप में समाज–सुधारकों का योगदान रहा, वहीं हिन्दी नवजागरण में इस प्रवेश के जागरुक लेखकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

हिन्दी क्षेत्र में नवजागरण की पहली सशक्त साहित्यिक अभिव्यक्ति भारतेन्दु हरिशचन्द्र के व्यक्तित्व में मिलती है। हिन्दी साहित्य में नवजागरण भारतेन्दु के माध्यम से ही अवतारित होता है।

नवजागरण काल के साहित्य में आर्थिक जीवन की समस्याओं, धन का विदेश गमन, मंहगाई, टैक्स–वृद्धि, अकाल का चित्रण, धार्मिक अंधविश्वासों, रुढ़ियों का परदाफाश, सामाजिक जीवन की विषमताओं, जाति प्रथा, बाल–विवाह, अशिक्षा, विधवा स्त्रियों का उत्पीडन जैसी कुरीतियाँ तथा राजनीतिक क्षेत्रों में अंग्रेजों की स्वार्थपूर्ण नीतियों का चित्रण और स्वदेशी के प्रति अनुराग का वर्णन प्रमुखता से हुआ। अंग्रजों की शोषण नीति का उल्लेख करते हुए लिखते हैं –

"अंगरेजराज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।"[5]

भारतेन्दु अपने युग के वास्तविक नेता थे। उक्त बातें उनमें ही नहीं उनके मण्डल के समस्त लेखकों में थी। उनके मण्डल में बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी, अम्बिकादत्त व्यास, लाला श्रीनिवासदास, राधाकृष्णदास, बालमुकुन्द गुप्त आदि प्रमुख है। भारतीय चेतना का प्रतिनिधित्व करते हुए भारतेन्दु ने 26 जनवरी 1874 की 'कविवचनसुधा' में लिखा –

"नया यह अनीति नहीं है कि उन्होंने हमारे धनधान्य की वृद्धि का कोई उपाय नहीं किया और व्यापार और धन को हस्तगत कर लिया। क्या यह खेद

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

नहीं है कि हमको कला–कौशल से विमुख रखा और स्वत: व्यापारी बनकर सब देश भर का धन और धान्य अपने देश ले गये।"[6]

मण्डल के प्रसिद्ध लेखक और विचारक बालकृष्ण भट्ट ने भी इस प्रकार की टिप्पणी की–

"देश का धन विलायत ढ़ोया जा रहा है हम कितना भारी पाप कर रहें हैं। तथा हजारों लाखों विलायती साहब लोग जो थोड़ा परिश्रम करके 'अल्पायम महत फलम्' की भाँति लम्बी–लम्बी तनख्वाहें फटकार कर असंख्य रुपया जमाकर विलायत में नवाब बनते हैं।"[7]

तत्कालीन समय में जब दिन–प्रतिदिन बढ़ती बेरोजगारी, भुखमरी और अकाल से जनता त्रस्त थी। अंग्रेजों के आगमन देश के कुटीर उद्योग नष्ट हो गये थे। जो आम जनता की जीविकोपार्जन का मुख्य आधार थे। परिणामस्वरुप कृषि पर जनसंख्या का बोझ बढ़ता जा रहा था। उपर से टैक्स एवं अकाल के कारण लोगों को रोटियों के लाले पड़ रहे थे। ऐसी स्थिति में भारतेन्दु ने स्वदेशीयता का नारा दिया। उन्होंने कहा कि स्वदेशी वस्तु के प्रयोग से कुटीर उद्योग को नवजीवन मिलेगा। साथ ही देश में उत्पादन बढ़ेगा, बेरोजगारी की समस्या दूर होगी और दूसरी तरफ देश का धन विदेश न जा सकेगा।

23 मार्च 1974 को 'कविवचनसुधा' में प्रतिज्ञा पत्र प्रकाशित किया गया –

"हम लोग सर्वांतयामी, सभी स्थल में वर्तमान, सर्वद्रष्टा और नित्य परमेश्वर की साक्षी देकर यह नियम मानते हैं कि आजके दिन से न कोई विलायती कपड़ा पहिनेंगे... ।"[8]

इस उद्धरण के सम्बन्ध में डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा –

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

"उस दिन हरिशचन्द्र की कलम से भारतीय जनता ने अंग्रेजी राज्य के नाश का वारंट लिख गया था।"[9]

धार्मिक रुढ़ियों एवं अंधविश्वासों का विरोध भी हिन्दी नवजागरण की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। बालकृष्ण भट्ट ने सनातन धर्म की आलोचना करते हुए 'हिन्दी प्रदीप' में लिखा है – "जिसमें सात वर्ष की कन्या ब्याही जाय, जिसमें एक जाति का छुआ भोजन कने से दूसरी जाति पतित हो जाए वह सनातन धर्म क्या विचारवान लोगों के पोषण योग्य है ? वह स्वार्थी, धर्मशास्त्र बर्हिमुख, यजमान सर्वस्व ब्राम्हणों के कमाने का इंस्टूमेण्ट है। हम ऐसे सनातन धर्म को नमस्कार करते हैं।"[10]

नवजागरण के इस दौर में हिन्दू–मुस्लिम एकता को लेखकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से दृढ़ करने का प्रयत्न किया। भारतेन्दु ने लिखा –

"घर में आग लगै, तब जेठानी देवरानी को आपस की डाह छोड़कर वह आग बुझानी चाहिए। जो बात हिन्दुओं को मयस्सर नहीं, वह धर्म के प्रभाव से मुसलमानों को सहज प्राप्त है। उनमें जाति नहीं, खाने पीने में चौका चूल्हा नहीं, विलायत जाने में रोक टोक नहीं, फिर भी बडे सोचने की बात है कि मुसलमानों ने अभी तक अपनी दशा नहीं सुधारी। अभी तक बहुतो को यही ज्ञात है कि दिल्ली, लखनऊ की बादशाहत कायम हे। यारों के दिन गये। अब आलस हठधर्मी को छोडो। लड़कों को रोजगार सिखलाओं, विलायत भेजो। छोटेपन से मेहनत की आदत दिलाओ। चलो हिन्दुओं के साथ तुम भी दौड़ो एक दो होंगे।"[11]

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि धर्म सम्बन्धी संकीर्ण विचारों का विरोध एवं हिन्दू–मुस्लिम एकता का प्रबल समर्थन उस समय के साहित्य में लेखकों द्वारा प्रखर रुप में हुआ। इसके साथ ही लोखकों ने स्त्री सुधार, स्त्री शिक्षा जैसे विषयों पर व्यापक आंदोलन चलाया। वे 'नर नारि सम होहि' का प्रतिपादन करते थे। भारतेन्दु जी बंगाल, बम्बई, मद्रास विश्वविद्यालयों से परीक्षोत्तीर्ण छात्राओं के लिए बनारसी साड़ी भेजकर उन्हें पुरस्कृत करते थे। स्त्रियों के लिए बाल–बोधिनी, स्त्रीदर्पण जैसी पत्रिकाएँ भी

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

निकाली गयी। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी सम्मानीय, आदर्श महिला की तस्वीर खीचतें हैं – "वो साड़ी पहनती है, बिंदी लगाती है और अपने पति के लिए प्रार्थना करती है, वो शिक्षित है, सभ्य सभाओं में जाती है और लौटकर अपने पति का दिल जीतती है।"[12]

भारतेन्दु युग में जिस राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ उसकी उमंग द्विवेदी युग में दिखायी देती है। हिन्दी प्रदेश के नवजागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले लोगों के द्वारा जहाँ सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में सुधार के महत्वपूर्ण प्रयास किए गए, वहीं भाषा सम्बन्धी सुधार तथा बड़ी संख्या में साहित्येतर विषयों की पुस्तकों अनुवाद जैसे कायों को भी बड़े स्तर पर व्यवहारिक रुप भी दिया गया। इस संदर्भ में 'सरस्वती' पत्रिका नवजागरण काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्रिका के रुप में सामने आती है। सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन 1900 से प्रारंभ हुआ।

शुरुआत में एक समिति इसका संपादन भर संभालती थी। जिसमें कार्तिक प्रसाद, जगन्नाथदास, बाबू श्यामसुन्दर दास थे। 1903 के आंरभ के साथ ही पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसके संपादन का कार्य अपने हाथों में लिया। एक निश्चित उद्देश्य व योजनाबद्ध तरीकों से पत्रिका के स्वरुप में निर्धारण द्वारा इसे लोकप्रिय पत्रिका के रुप में स्थापित किया। जिसके द्वारा लोगों की रुचियों में परिष्कार हुआ।

मार्च 1916 में 'सरस्वती' पत्रिका में शिवप्रसाद गुप्त का एक लेख 'वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी सुधार' शीर्षक से प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने कहा–

"देश रुपी शरीर का प्रधान अंग वाणिज्य व्यवसाय है। जब तक किसी देश में आर्थिक स्वतंत्रता नहीं होती, अर्थात् वहीं के निवासियों को धन व्यय करने का अधिकार नहीं होता तब तक देश के वाणिज्य का पनपना संभव नहीं। मेरा अभिप्राय है कि जब तक देश के निवासियों को यह अधिकार प्राप्त नहीं होता कि वे जनता से प्राप्त धन को अपनी आवश्यकता अनुसार व्यय करें, विदेश से आये हुए माल पर कर लगाएँ, जिन्हें वे अनुपयोगी एवं अनुचित समझे, उन वस्तुओं को देश में आने

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

से रोके और तत्सम्बन्धी अपने अधिकार की रक्षा करें तब तक उनके वाणिज्य की उन्नति नहीं हो सकती।"[13]

तात्पर्य यह है कि देश में उत्पन्न संसाधनों पर देश की जनता का अधिकार ही सर्वोपरि है तथा आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

द्विवेदी युग की रचनाओं में गुलामी का स्पष्ट अहसास, अतीत के प्रति गौरव भाव एवं भविष्य को बेहतर बनाने का संकल्प तो दिखाई देता है किन्तु इस युग के काव्य में स्वतंत्रता एवं मुक्ति की स्पष्ट भावना नहीं उभर सकी। गुलामी का अनुभव तो हुआ पर मुक्ति की प्रबल चाह उसका स्थान न ले सकी। यथार्थ तो कवि की नजरों में आया लेकिन उसमें निहित सत्य को देखने की अंतर्दृष्टि विकसित न हो सकी। ऐसे में 20 वीं सदी के दूसरे दशक की हिन्दी कविता में एक नयी प्रवृत्ति उभरकर आने लगती है। इन नये कवियों ने प्रकृति और मानव जीवन को आत्मगत, आत्मीय और रुमानी दृष्टि से देखने की ललक उत्पन्न हो रही थी। ये द्विवेदी युगीन वस्तुवादी–नैतिकतावादी दृष्टि से भिन्न थी। इस नयी प्रवृत्ति को (रोमेंटिसिज्म) कहा गया। जिसमें श्रीधर पाठक, मुकुटधर पाण्डेय तथा रामनरेश त्रिपाठी जैसे महत्पपूर्ण कवि थे।

इस स्वच्छंदतावादी धारा ने छायावाद को पृष्ठाधार दिया। 20वीं सदी के दूसरे दशक की कुछ राजनीतिक घटनाएँ थीं जिन्होंने छायावाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी (1) प्रथम विश्वयुद्ध (2) रुसी क्रान्ति।

इन दोनों घटनाओं ने स्वतंत्रता एवं समानता की विचारधारा को वैश्विक स्तर पर प्रसारित करने में योगदान दिया। परिणामस्वरुप 1920 का असहयोग आंदोलन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन उच्च–मध्य वर्ग से निकलकर मजदूरों, किसानों निम्न वर्ग तक अपनी पहुँच बनाता है। इन सबका प्रभाव न केवल राजनीति पर बल्कि व्यक्ति

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

के मन पर भी पड़ा। अब यह भावना प्रबल होती जा रही थी कि स्वतंत्रता एवं मुक्ति ही लक्ष्य होना चाहिए। छायावादी रचनाकारों में मुक्ति ही लक्ष्य होना चाहिए। छायावादी रचनाकारों में मुक्ति का स्वर इतना प्रबल है कि वह समस्त रुढ़ियों, परम्पराओं एवं मान्यताओं से अपने को मुक्त कराना चाहता है –

"टुकड़े हद्‌य कपाट
खोल दे, कर कठिन प्रहार।"

– निराला

इस युग में एक ओर निराला, प्रसाद, पन्त, महादेवी आदि कवि हुए, दूसरी ओर माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि रचनाकार हुए। इन्होंने आर्थिक, राजनीतिक दासता के विरुद्ध स्वाधीनता केवल राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि मानव स्वाधीन मूल्यों की भी प्रतिष्ठा की।

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी नवजागरण केवल हिन्दी की उन्नति नहीं है। यह एक राष्ट्रीय जागरण है जिसने सदियों की दासता के कारण रुढिग्रस्त एवं आत्म केन्द्रित जनता में नवीन चेतना एवं स्फूर्ति का संचार किया या हम यह भी कह सकते हैं कि यह भारत की अस्मिता की खोज का युग है। आधुनिकीकरण के प्रति आकर्षण, आत्मपहचान के लिए संघर्ष, स्वाधीनता संग्राम, साहित्य एवं शैक्षणिक विकास धार्मिक सुधार के चिन्ह इसमें स्पष्ट दिखायी देते हैं। हिन्दी नवजागरण की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि इसने भारत एवं अंग्रेजी राज को देखने का नजरिया बदला हिन्दू–मुस्लिम मैत्री भाव को स्थापित किया।

संदर्भ सूची

1. भगवती प्रसाद शर्मा, नवजागरण और प्रतापनारायण मिश्र, प्रथम संस्करण, 1994. पृष्ठ क्रं. – 01

2. वही पृष्ठ – 02

3. वही पृष्ठ – 03

4. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश (पारिभाषिक शब्दावली), भाग–1 पृष्ठ क्रं. 313–317

5. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, भारत दुर्दशा, सं–डॉ. लाल सिंह चौधरी, के. एल. पचौरी प्रकाशन, संस्करण– 2002, पृष्ठ क्रं.–26

6. डॉ. नगेन्द्र, हरदयाल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, तीसरा संस्करण– 2009, पृष्ठ कं.–440

7. भगवती प्रसाद शर्मा, नवजागरण और प्रतापनारायण मिश्र, प्रथम संस्करण– 1994 क्रं.–70

8. वही पृष्ठ – 69

9. वही पृष्ठ – 72

10. बालकृष्ण भटट्– हिन्दी प्रदीप, दिसम्बर– 1881

11. भगवती प्रसाद वर्मा– नवजागरण, अर्थ स्वरुप, पृष्ठ क्रं.– 79

12. महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली, खण्ड– 13

13. महावीर प्रसाद द्विवेदी– 'सरस्वती पत्रिका', मार्च – 1916

शोधार्थी

हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय,

पता– 83, बाल विहार कॉलोनी,

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

कालवाड़ रोड़, जोशी मार्ग के पास,
झोटवाड़ा, जयपुर, राजस्थान
पिनकोड़–302012
मोबाईल–9530157036